हरिवंश राय बच्चन

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' गीत में कवि ने दिन और रात के माध्यम से जीवन और मृत्यु को प्रतीक मानकर वर्णन किया है। दिन समाप्त हो रहा है, यह मानकर पथिक जल्दी-जल्दी अपनी मंजिल पर पहुँचना चाहता है। पथिक के बच्चे उसका घर पर इंतजार कर रहे हैं। बच्चों की तुलना कवि ने पक्षियों के बच्चों से की है। वे अपने आत्मीयजनों से मिलने को व्याकुल हो रहे हैं। कवि का मन बेचैनी से युक्त होकर प्रश्नों को जन्म दे रहा है। दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है अर्थात् व्यक्ति का जीवन धीरे-धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा है। जीवन के अकेलेपन की पीड़ा असहनीय है। कार्य में लगे पथिक की थकान इस विचार से दूर हो जाती है कि उसके परिजन उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। अकेलेपन का बोध लौटते कदमों को शिथिल एवं मन को विह्वल करता है।

पैरों में शिथिलता और विह्वलता का अनुभव कवि को इसलिए हो रहा है क्योंकि कोई भी उससे मिलने को आतुर नहीं है। कोई भी उनके लौटने की प्रतीक्षा घर में नहीं कर रहा है। मानव ही नहीं पशु-पक्षी भी भावनात्मक रिश्तों में अकेलापन महसूस करते हैं। इसी अकेलेपन के कारण वे अपने जीवन में निराशा का अनुभव करने लगते हैं।

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' में पक्षी लौटने की विकल है, क्योंकि घोंसले में बच्चे उसका इंतजार कर रहे है। दूसरी ओर कवि में उत्साह नहीं है, क्योंकि कोई भी उससे मिलने को व्याकुल नहीं है। इस तरह मानव ही नहीं पशु-पक्षी भी भावात्मक रिश्तों के कारण अपने जीवन में उत्साह, निराशा का अनुभव करते हैं।

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में यह स्पष्ट किया गया है कि समय परिवर्तनशील है जो सतत चलायमान रहता है। यह कभी भी नहीं रुकता, न ही यह किसी की प्रतीक्षा करता है। इस पर जीवन क्षणभंगुर है। अत: कब जीवन समाप्त हो जाए किसी को नहीं पता इसलिए मनुष्य को अपने लक्ष्य को अतिशीघ्रता से प्राप्त कर लेना चाहिए। मनुष्य में यह विश्वास होना चाहिए कि वह कम-से-कम समय में अपनी मंजिल को प्राप्त कर ले।

चिड़िया के परों में चंचलता इसलिए है क्योंकि घोंसले में बच्चे उसका इंतजार कर रहे होंगे। दूसरी ओर कवि के पैरों में शिथिलता इसलिए है कि कोई भी उससे मिलने को व्याकुल नहीं होगा। अकेलेपन की पीड़ा इस कविता का प्रतिपाद्य है। मानव ही नहीं पशु-पक्षी भी भावनात्मक रिश्तों के कारण अपने जीवन में उत्साह एवं निराशा का अनुभव करते हैं।

कुंवर नारायण

कविता कल्पना के पंखों पर चिड़िया की तरह मुक्त गगन में विचरण करती है और फूलों की भाँति खिलकर अपनी शोभा सर्वत्र फैला देती है। किन्तु कविता चिड़िया से भिन्न इसलिए है क्योंकि चिड़िया के पंखों की सामर्थ्य सीमित है, जबकि कविता की सामर्थ्य असीमित है। इसी प्रकार फूल खिलकर मुरझा जाते हैं, किन्तु कविता कभी मुरझाती नहीं। उसकी सुगंध रूपी शोभा समय बीतने के साथ और भी बढ़ती जाती है।

रघुवीर सहाय

यह शीर्षक पूर्णत: उपयुक्त और सार्थक है। शीर्षक 'कैमरे में बंद अपाहिज' अर्थात कैमरे के सामने लाचार और बेबस अपाहिज की मानसिकता का सफल प्रतिनिधित्व करता है। यह दूरदर्शन के कार्यक्रम संचालकों की मानसिकता पर व्यंग्य करता है जो अपाहिज को भी प्रदर्शन की वस्तु बना देते हैं।

'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता में दूरदर्शन के भौंड़े कार्यक्रमों पर करारा प्रहार किया गया है। इस कविता में कवि ने शारीरिक रूप से दुर्बल व्यक्ति के प्रति करुणा भाव प्रकट किए हैं लेकिन दूरदर्शन कैमरा अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपाहिज के प्रति संवेदनहीन रवैया अपनाता है। कैमरे वाले दर्शकों को दिखाते हुए अपाहिज की संवेदनाओं को नहीं देखते। दूरदर्शन शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति संवेदनशीलता की अपेक्षा संवेदनहीनता का रवैया अपनाता है, जिसके कारण अपाहिज लोगों के हृदय में क्रूरता के भाव पैदा हो जाते हैं।

शारीरिक रूप से अपाहिज व्यक्ति के मनोभाव, उसके दु:ख, उसकी आँसू से भरी आँखें स्पष्ट रूप से बड़ा-बड़ा करके दिखाने की वजह यह है ताकि दर्शक उसके दु:ख से दु:खी हों और उनमें अपाहिज के प्रति सहानुभूति व करुणा जाग्रत हो; जिससे दर्शकों की आँखों में भी आँसू आ जाएँ। इस तरह दोनों के रोने पर उसका कार्यक्रम सफल हो जाता है।

'कैमरे में बन्द अपाहिज' कविता में दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर करारा प्रहार किया गया है। इस कविता में कवि ने शारीरिक रूप से दुर्बल व्यक्ति के प्रति करुणा भाव प्रकट किया है, लेकिन दूरदर्शन कैमरा अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपाहिज के प्रति संवेदनहीन रवैया अपनाता है। कैमरे वाले दर्शकों को ऐसे कार्यक्रम दिखाते हुए अपाहिज की संवेदनाओं को नहीं देखते। दूरदर्शन शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति संवेदनशीलता की अपेक्षा संवेदनहीनता का रवैया अपनाता है, जिसके कारण अपाहिज लोगों के हृदय में क्रूरता के भाव पैदा हो जाते हैं।

इस कथन से साक्षात्कार की व्यावसायिक प्रवृत्ति का पता चलता है तथा यह भी पता चलता है कि लोगों में भावना, संवेदना के स्थान पर धन को प्रधानता देने की प्रवृत्ति है क्योंकि साक्षात्कार के समय वे लोगों (दर्शकों) की सहानुभूति अर्जित करना चाहते हैं लेकिन समय सीमित होता है। ज्यादा समय लेने के लिए ज्यादा धन देना होता है।

गजानन माधव मुक्तिबोध

कवि ने अपने जीवन की कड़वी-मीठी अनुभूतियों, सुख-दु:ख पूर्ण परिस्थितियों, व्यक्तित्व की दृढ़ता के मीठे-फीके अनुभव आदि सबको सहर्ष स्वीकार किया है क्योंकि कवि इन सबके साथ अपनी प्रिया को जुड़ा पाता है।

कवि को अपनी प्रेयसी की बहलाती, सहलाती आत्मीयता बर्दाश्त नहीं होती अत: कवि संबोध्य (तुम) को भूल जाने का दंड माँग रहा है। साथ ही वह प्रेम-भावना में नहाना चाहता है। वह अंधकार के प्रेम में घिरा रहना चाहता है। भविष्य की संभावना उसे दुर्बल बनाती है, डराती है अत: ऐसे विरोधाभासी ख्याल उसके मन में आते हैं।

शमशेर बहादुर सिंह

'उषा' कविता के आधार पर भोर के नभ का चित्रण करते हुए कवि ने स्पष्ट किया है कि सूर्योदय से पहले भोर के समय का आसमान नीले शंख जैसा लग रहा था। आकाश का रंग रात की नमी के कारण ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे तुरंत ही राख से लीपा हुआ चौका। कवि उषा के आगमन के कई बिंब बनाता हुआ बताता है, जिसे देखकर ऐसा लगा मानो आकाश रूपी काली सिल थोड़े से लाल केसर से धुल गई हो। वस्तुत: यह सूर्योदय के पूर्व आकाश में फैली हल्की लालिमायुक्त आभा का बिंब है या किसी बालक ने काली स्लेट पर थोड़ी लाल खड़िया या चाक मल दी हो।

'सिल' से अभिप्राय शिला या चट्टान से है। यह प्राय: श्याम वर्ण की होती है। इस पर लाल रंग वाली केसर रगड़ देने से लाल और काले रंग का मिश्रण हो जाता है। उसी प्रकार उषा काल में आकाश अंधकारयुक्त होता है। उसमें सूर्योदय से पहले की लालिमा के मिश्रण का रंग भी लाल केसर से धुली हुई शिला के समान दिखाई देता है।

उषा कविता में कवि ने गतिशील बिंब योजना का प्रयोग करते हुए गाँव की सुबह का सुन्दर शब्द-चित्र प्रस्तुत किया है। बहुत सुबह पूर्व दिशा में सूर्य दिखाई देने से पहले आकाश नीले शंख के समान प्रतीत हो रहा था। उसका रंग ऐसा लग रहा था जैसे किसी गाँव की महिला ने चूल्हा जलाने से पहले राख से चौका पोत दिया हो। उसका रंग गहरा था। कुछ देर बाद हल्की-सी लाली ऐसे दिखाई दी जैसे काले सिल पर जरा-सा लाल केसर डाला हो और फिर उसे धो दिया हो या किसी स्लेट पर लाल खड़िया या चॉक मल दी हो। आकाश के नीलेपन में सूर्य ऐसे प्रकट हुआ जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा सुन्दर शरीर झिलमिलाता हुआ प्रकट हो रहा हो, लेकिन सूर्य के दिखाई देते ही यह सारा प्राकृतिक सौन्दर्य मिट गया। कवि के द्वारा प्रस्तुत बिम्ब योजना गतिशील है और उससे पल-पल बदले गाँव के प्राकृतिक दृश्यों की सुन्दरता प्रकट हो रही है।

'उषा' कविता में कवि ने गतिशील बिम्ब योजना का प्रयोग करते हुए गाँव की सुबह का सुन्दर शब्द-चित्र प्रस्तुत किया है। बहुत सुबह पूर्व दिशा में सूर्य दिखाई देने से पहले आकाश नीले शंख के समान प्रतीत हो रहा था। उसका रंग ऐसा लग रहा था जैसे किसी गाँव की महिला ने चूल्हा जलाने से पहले राख से चौका पोत दिया हो। उसका रंग गहरा था। कुछ देर बाद हल्की-सी लाली ऐसे दिखाई दी जैसे काले सिल पर जरा-सा लाल केसर डाला हो और फिर उसे धो दिया हो या किसी स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दी हो। आकाश के नीलेपन में सूर्य ऐसे प्रकट हुआ जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा सुन्दर शरीर झिलमिलाता हुआ प्रकट हो रहा हो, लेकिन सूर्य के दिखाई देते ही यह सारा प्राकृतिक सौन्दर्य मिट गया।

कवि के द्वारा प्रस्तुत बिम्ब योजना गतिशील है और उससे पल-पल बदले गाँव के प्राकृतिक दृश्यों की सुन्दरता प्रकट हो रही है।

तुलसीदास

कवितावली की इस पंक्ति में तुलसीदास ने यह बताया है कि समाज में लोगों को रोजगार उपलब्ध नहीं है। न किसान को खेती है, न व्यापारी को व्यापार और न चाकर को नौकरी। सब लोग पेट की आग (भूख) से त्रस्त हैं। यह आग राम भक्ति रूपी जल (रामकृपा) से ही शांत हो सकती है। समाज की दशा अत्यंत दयनीय थी।

तुलसीदासजी के अनुसार तत्कालीन समाज में जीविकोपार्जन के पर्याप्त साधन न होने के कारण लोग यहाँ-वहाँ भटकते थे तथा अपने बेटे-बेटियों को भी बेचने का नीच कार्य करते थे। आज के समय में भी समाज में बेरोजगारी, महँगाई, भुखमरी आदि से समाज पीड़ित है। लोगों को जीविकोपार्जन के लिए भटकना पड़ता है। पेट की आग को शांत करने के लिए अपने बच्चों को मजदूरी करने हेतु भेजने पर विवश होना पड़ता है जिसके कारण समाज में बाल श्रमिकों की समस्या उत्पन्न हो गई है।

तुलसीदास को इस दुरावस्था में अपने आराध्य, मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का भरोसा है, क्योंकि वे दीनबन्धु हैं। संकटकालीन स्थिति में भक्तों की सहायता को सदैव तत्पर रहते हैं। इनसे सहायता की उम्मीद रखने वाले कभी निराश नहीं होते। इनका मनोरथ अवश्य पूर्ण होता है।

तुलसीदास ने अपने काव्य में सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विशद वर्णन किया है। जब सभी श्रमजीवी, किसान वर्ग, बनिया, भिखारी, भाट, नौकर, नटवर्ग, चोर तथा जादूगर अपनी भूख मिटाने के लिए जीविकोपार्जन हेतु पढ़ते-लिखते थे तथा कुशलता अर्जित करते थे। पहाड़ पर चढ़ने जैसे कठिन कार्य को करते थे। ये सब पेट की खातिर यहाँ-वहाँ भटकते थे। शिकारी गहरे वन में दिन भर मारे-मारे भटकते थे। पेट की भूख मिटाने के लिये अत्याचार, अन्याय, ऊँच-नीच, अनैतिक, धर्म-अधर्म के कार्य करके पेट भरते थे। पेट की खातिर अपने बेटे-बेटियों को भी बेचने का नीच कार्य करते थे।

तुलसी को हाय-हाय करने की नौबत इसलिए आई क्योंकि लोग जीविकाविहीन हैं, दरिद्र हैं, दु:खी हैं, एक-दूसरे से इस स्थिति से मुक्ति पाने का उपाय पूछ रहे हैं। यह देखकर तुलसी दु:खी होकर हाय-हाय करते हुए दीन-बन्धु राम से यह प्रार्थना करते हैं कि आप कृपा करके दुनिया को इस संकट से उभारिये।

तुलसीदास के अनुसार तत्कालीन समाज में जीविकोपार्जन के पर्याप्त साधन न होने के कारण लोग यहाँ-वहाँ भटकते थे तथा अपने बेटे-बेटियों को भी बेचने का नीच कार्य करते थे। आज के समय में भी समाज में बेरोजगारी, महँगाई, भुखमरी आदि से समाज पीड़ित है। लोगों को जीविकोपार्जन के लिए भटकना पड़ता है। पेट की आग को शांत करने के लिए अपने बच्चों को मजदूरी करने हेतु भेजने पर विवश होना पड़ता है, जिस कारण समाज मत्रें 'बाल श्रमिक' की समस्या उत्पन्न हो गई।

तुलसीदास जी ने अपने काव्य में सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विशद वर्णन किया है। जब सभी श्रमजीवी, किसान वर्ग, बनिया, भिखारी, भाट, नौकर, नटवर्ग, चोर तथा जादूगर अपनी भूख मिटाने के लिए जीविकोपार्जन हेतु पढ़ते-लिखते थे तथा कुशलता अर्जित करते थे, पहाड़ पर चढ़ने जैसे कठिन कार्य को करते थे, ये सब पेट की खातिर यहाँ-वहाँ भटकते थे, पेट की भूख मिटाने के लिए अत्याचार, अन्याय, ऊँच-नीच, अनैतिक, धर्म-अधर्म के कार्य करके पेट भरते थे। पेट की खातिर अपने बेटे-बेटियों को भी बेचने का नीच कार्य भी करते थे।

फिराक गोरखपुरी

शायर, राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि राखी (रक्षा सूत्र, रक्षाबंधन) एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर चमकीले लच्छे हैं। सावन के महीने में रक्षाबंधन का पर्व आता है। सावन का जो सम्बंध बिजली से है—वही सम्बंध भाई का बहन से है। जब आकाश में बिजली की चमक बादलों के मध्य चमकती है, तब वह राखी के लच्छे की तरह होती है।

फ़िराक की गजल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने का प्रतीकात्मक अर्थ है पहला कलियों का खिलना और दूसरा सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगंध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है। सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है।

हुस्न एवं इश्क के बारे में कवि का मत हैं कि जो व्यक्ति हुस्न तथा इश्क को प्रमुखता देता है, वह उतना ही पाता है जितना वह खो देता है। इश्क में मनुष्य कुछ भी नहीं कर पाता। वह कहता है कि तुम्हारी आँखों की चमक-दमक हमारी शेरो-शायरी के कारण आई है या फिर हमने किसी मोती को खोला है। तुम्हारी आँखों की चमक बहुत नशीली है।

चाँद का टुकड़ा माँ का प्यारा बेटा है। माँ अपने प्यारे बेटे को अपने घर के आँगन में लेकर खड़ी है। वह अपने कोमल बच्चे को अपने आँचल में छुपा रही है। बार-बार उसे हवा में उछालती है, तो बच्चा खुश होकर खिलखिलाने लगता है। उसकी खिलखिलाहट से सम्पूर्ण वातावरण, गूँजित हो उठता है। इस तरह कवि ने 'चाँद के टुकड़े' से बच्चे को प्रतिपादित किया है।

कवि फिराक अपनी गजल के माध्यम से प्रेम में सफलता प्राप्त करने के लिए समर्पण को आवश्यक मानते हैं। प्रेम में पूर्ण समर्पण का होना आवश्यक है, क्योंकि जितना देते हैं उतना ही पाते है। प्रेम में खोना और पाना एक साथ चलता है। वह हर पल अपनी प्रेमिका को याद करता रहता है, जिससे विरह की पीड़ा से मुक्त नहीं हो पाता है।

रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। रक्षाबंधन का त्योहार सावन के महीने में आता है। सावन का जो संबंध भीनी घटा से है, घटा का जो सम्बन्ध बिजली से है—वही सम्बन्ध भाई का बहन से है।